परिचय

एक लेखक के लेख में उस काल की झलकियाँ प्रतिबिंब होती है जिसमें वह रहता है। यद्यपि वह अपने लेख में अटल सच्चाई प्रस्तुत करता है तौभी उसे वह अपने समकालीन संसार के संदर्भ में ही लिखता है। जो कुछ एक लेखक लिखता है उसमें कुछ सीमा तक उसके समय की झलकियाँ प्रतिबिंब होती है; परंतु यदि वह दस्तावेज एक पत्र हो तो इस बात की अधिक अपेक्षा की जाती है कि लेखक का लेख उस समय व काल का प्रतिबिंब करे जिसमें वह स्वयं व उसके मूल पाठक रहते हैं। पत्र में सामान्यतः कोई भी उस स्थान और वहाँ के लोगों को जानने के लिए, जिनको वह संबोधित कर रहा है, से यह अपेक्षा करता है कि लेखक उस स्थान और उसके पाठकों का सामूहिक अनुभव एवं परिचय साझा करे। इस कारण, लेखक के अनुभव व उसके समयकाल की झलक पाने के लिए, उसके प्रथम पाठकों को इस प्रकार का परिचय की आवश्यकता नहीं होती है या फिर थोड़ी बहुत जानकारी की ही आवश्यकता होगी। लेकिन उसके बाद के पाठकों को - जो व्यक्तिगत रूप से न तो लेखक व उसके मूल पाठकों से परिचित हैं - उनकी परिस्थिति ऐसी नहीं होगी।

जितना अधिक पत्र की परिस्थिति से, जिसमें यह लिखा गया था, गौण पाठक समय एवं कालों से दूर होंगे, उनको उतनी ही अधिक सचेत होकर, लेखक व उसके मूल पाठकों की दुनिया, जिसको उन्होंने साझा किया था, को समझने का प्रयास करना होगा। यह किसी भी पत्र की सच्चाई है, चाहे वह प्राचीन हो या फिर समकालीन, चाहे वह प्रेरित हो या न हो। जब आधुनिक पाठक 1 पतरस पढ़ते हैं तो वे इसे कई शताब्दियों उपरांत पढ़ते हैं जिसमें सांस्कृतिक भिन्नता पाई जाती है। यह इस बात को अनुमोदित करती है कि जब हम इसके लेखक, जिस समय वह रहा और किस कारण उसने यह पत्र लिखा, से परिचित होंगे तो इस संबंध में हमारा ज्ञान और अधिक प्रज्वलित हो जाएगा।

पहला पतरस की पत्री से संबंधित निम्न प्रश्न उठाया जा सकता है: प्रथम पाठकों के साथ जिनसे उसने यह पत्र पढ़ने की अपेक्षा की होगी, लेखक का क्या संबंध रहा होगा? ऐसी कौन सी परिस्थिति रही होगी जिसमें लेखक ने इन लोगों को इस समय यह पत्र लिखा? लेखक, प्रथम पाठक और उनके पड़ोसियों की धार्मिक विचार धारा क्या थी? उस समय के लोगों का सामाजिक नैतिकता और रीति रिवाज क्या था? लेखक और उसके पाठकों की भाषा क्या थी? उस समय के लोगों का जीविका का साधन क्या था? वे किस प्रकार के शासक के अधीन रहते थे? उनकी सामाजिक व्यवस्था कैसी थी? ये सभी प्रश्न एक समान विचारों के इर्द-गिर्द घूमते हैं।

यदि किसी दस्तावेज, जो हमें दूरस्थ समय और स्थान से प्राप्त हुआ है, को समझना है तो हमें इस प्रकार की जानकारियों की छानबीन करनी होगी। यह व्यक्तिगत दस्तावेज होने के कारण, विशेषकर जब दस्तावेज एक पत्र हो तो इसकी छानबीन करना जटिल होता है। जबकि 1 पतरस वैधानिक दस्तावेज है, और सामान्य पत्र से अधिक सावधानीपूर्वक लिखा गया है, तौभी यह एक पत्र है। पहला पतरस के लेखक और इसके पाठकों की दुनिया से जब हम पूरी तरह उलझ जाते हैं (रू-ब-रू होते हैं) तो हम भी वह बात समझ सकते हैं जो पतरस उनको समझाना चाहता था। जब हम भी यह समझ लेते हैं कि जो बात इस पत्र के द्वारा उनको समझाने का प्रयास किया गया है तो इसका अनुमान लगाने में हम सक्षम हो जाते हैं कि यह पत्र वर्तमान काल में मसीहियों को अनुशासित करने के लिए किस तरह प्रयोग किया जा सकता है।

पत्री

पहला पतरस एक पत्री है, हालांकि कुछ विद्वान इस बात पर कुछ और ही तर्क प्रस्तुत करते हैं। कुछ विद्वानों का तर्क यह है कि इस दस्तावेज का प्रमुख भाग मूल रूप से पत्र के रूप में नहीं, बल्कि एक निर्देशिका के रूप में लिखा गया था। उनका तर्क यह है कि यह पत्र रोम में नए विश्वासियों को लाभ पहुँचाने के लिए लिखा गया था। आगे यह भी कहा गया है कि पहला पतरस मूल रूप से एक दस्तावेज है जिसमें यह वर्णन किया गया है कि मसीही होने का क्या तात्पर्य है। कुछ विद्वानों का ऐसा तर्क है कि पहला पतरस नए मसीहियों के लिए एक निर्देशिका के रूप में लिखा गया था जो उनको बपतिस्मा लेने के लिए अगुआई करता है।[1] कालान्तर में सिद्धान्त यह कहता है कि कुछ अच्छे मसीहियों ने इस दस्तावेज को पत्र का स्वरूप प्रदान किया, इस पर पतरस प्रेरित का नाम लिखा और अधिक पाठकों तक इसको प्रसारित किया। सत्य तो यह है कि रूढ़िवादी बाइबल के विद्वानों के मध्य इस सिद्धान्त का समर्थन नहीं पाया जाता है। समय बीतने के साथ ही उदारवादी विद्वानों ने भी इस प्रकार के विश्लेषणों का विरोध किया। इसके कारणों का पता लगाना इतना कठिन नहीं है।

परमेश्वर की प्रेरणा पाए प्रश्नों को यदि अलग छोड़ दिया जाए तो इसकी कल्पना करना अत्यंत कठिन होगा कि ऐसी कौन सी बात थी जिसने किसी को निर्देश पत्र या बपतिस्मा संबंधी दस्तावेज को पतरस द्वारा रोम से लिखे जाने और तब आसिया में फैली कलीसिया को इसे भेजे जाने का बहाना बनाने के लिए प्रेरित किया होगा। यदि जिसने भी 1 पतरस को प्रथम पाठकों को बपतिस्मा संस्कार के रूप में प्रयोग करने के उद्देश्य से भेजा होगा तो कोई भी यह सोच कर अचंभित होगा कि उसने इसे पत्र के रूप में उनके पास क्यों भेजा। जिसने भी इसे, जो वास्तव में एक पत्र नहीं बल्कि एक बपतिस्मा संस्कार का दस्तावेज है, मूल पाठकों को पत्र के रूप में भेजा, तो उनके द्वारा इसकी क्या पहचान करने की अपेक्षा की गई होगी? जिन्होंने भी इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है उन्होंने

इसकी संतोषजनक व्याख्या प्रस्तुत नहीं की है।

पहला पतरस का अभिनंदन, उपदेश, शांति का वचन, संस्मरण और सारांश प्राचीन पत्रों में पाई जाने वाली सामान्य विधा है। इसके साथ ही प्राचीन कलीसियाई परंपरा 1 पतरस को, जैसा यह हम तक पहुँचा है, एक पत्र के अलावा किसी दूसरे विधा के रूप में नहीं जानता है। फिर भी, यह आशंका जताई जा सकती है कि 1 पतरस की उत्पत्ति बपतिस्मा विधि या मसीही शिक्षा के दस्तावेज के रूप में हुई होगी जिससे अप्रत्याक्षित परिणाम आया। इस पत्री ने बपतिस्मा के प्रति मसीहियों के स्वज्ञान की चेतना की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

यह सत्य है कि जब प्रारम्भिक मसीहियों को उनके हृदय परिवर्तन का अनुभव, विशेषकर बपतिस्मा के बारे में स्मरण दिलाया गया होगा तो इस पत्री ने उनको सतत उत्साह और विश्वासयोग्य रहने व भक्ति पूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरणा प्रदान की होगी। पौलुस के शब्दों का प्रयोग करके "नए जन्म के स्नान" (तीतुस 3:5) का अभिप्राय पतरस के संदेश से अधिक है, वैसा नहीं जैसा आधुनिक व्याख्या करने वाले आमतौर पर समझते हैं। यदि हमें इस पत्री की उत्पत्ति का प्रमाण बपतिस्मा विधि के निर्देश दस्तावेज के रूप में न भी मिलता हो तौभी यह बात सत्य है। ऐसे स्थिति में यह बात सामान्य लगता है कि पतरस अपने पाठकों के मन परिवर्तन/बपतिस्मा के कई संदर्भ इस पत्री में प्रस्तुत करे (1:3, 23; 2:1, 2; 3:21)। पतरस या उसके प्रथम पाठकों के लिए अपने बपतिस्मा के बारे में सोचे बिना मसीह की ओर हृदय परिवर्तन के बारे में सोचना अनहोना था।

पत्री की एकरूपता

यह जानना आवश्यक है कि क्या 1 पतरस एक एकात्म दस्तावेज है कि नहीं अर्थात क्या यह एक ही अवसर के लिए एक लेखक के द्वारा लिखा गया है। पुस्तक की एकरूपता के बारे में उठाए गए प्रश्न आमतौर पर 1 पतरस 4:12 के इर्द-गिर्द घूमते हैं। पहला पतरस 4:11, उपसंहार और सराहना का वचन है जो सामान्यता एक पत्र के अंत में या फिर इसके अंतिम शब्दों के रूप में पाया जाता है। इसके साथ ही, 4:12-19 में पाठकों के दुःखों का विस्तृत विवरण पाया जाता है और संभवतः अति दर्दनाक भी है और यह पत्री के अन्य भागों में नहीं पाया जाता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि 1 पतरस का वास्तविक पत्र का भाग 4:12-5:14 है। इस विषय पर वाद विवाद ऐसा बढ़ता गया है कि कुछ समय पश्चात्, किसी ने 4:12-5:14 को बपतिस्मा पश्चात् दस्तावेज, जिसका पहले भी वर्णन किया जा चुका है, के रूप में जोड़ दिया और इसे प्रेरित पतरस के नाम से भेज दिया।

जब 1 पतरस का बारीकी से विश्लेषण किया जाता है तो यह विवाद कि 1 पतरस को दस्तावेजों की टुकड़ियों के रूप में संकलित किया गया है, विफल

होता है। सर्वप्रथम, ऐसा कोई नियम नहीं है कि उपसंहार या अंतिम शब्द किसी दस्तावेज के अंत में ही होना चाहिए। पौलुस ने अपने सबसे सुंदर उपसंहारों में से एक उपसंहार 1 तीमुथियुस 6:15, 16 में लिखा और उसके पश्चात् उसने पत्र लिखना जारी रखा। इफिसियों की आधी पत्री लिखने के पश्चात्, पौलुस ने उपसंहार लिखा (इफिसियों 3:20, 21)। आगे, 1 पतरस 4:12-19 में सताव का बहुत गंभीर वर्णन है, जबकि इससे पहले प्रेरित ने पत्री में यह लिखा कि उसके पाठकों का विश्वास "आग से ताया" गया था (1:7)।

यह कल्पना कि 1 पतरस दो या इससे अधिक दस्तावेजों के रूप में लिखी गई थी जिसको मिलाकर एक पत्री का स्वरूप दिया गया, व्यक्तिपरक तर्कों पर आधारित है। इस विवाद को स्वीकार करने का कोई जायज़ कारण नहीं है। यह संभावना जताई जाती है कि पतरस ने 4:12-5:14 को पत्री में तब जोड़ा होगा जब उसने अपने पाठकों के सताव के बारे में सुना होगा, लेकिन यह तथ्य भी अनिश्चित है। यदि प्रेरित ने 4:12-5:14 को नई सूचना प्राप्त होने के बाद लिखा भी होगा तो इससे पत्री की एकरूपता में कोई असर नहीं पड़ता है।

पत्री लिखे जाने का संदर्भ

पत्री के कठिन तथ्यों को समझने के बजाय यह समझना अनिवार्य होगा कि आखिर लेखक ने इसे क्यों लिखा। पतरस ने इसे क्यों लिखा? उसके पाठकों की कैसी परिस्थिति थी जिसने उसे यह पत्री लिखने के लिए विवश किया होगा? यदि हम 1 पतरस का, बाइबल को छोड़कर दूसरे ऐतिहासिक दस्तावेजों के साथ बारीकी से अध्ययन करने का प्रयास करें तो यह इन प्रश्नों का उत्तर ढूँढने में हमारी सहायता करेगा। जब पाँचों संक्षिप्त अध्यायों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाता है तो कुछ महत्वपूर्ण अवलोकन सामने आते हैं : उसके पाठकों का दुःख ही मुख्य कारण है जिसके कारण प्रेरित ने इसे लिखा। दुःख, वास्तव में, पूरी पत्री में पाया जाता है।

पहला पतरस के लिखे जाने की तिथि का विश्लेषण हम बाद में करेंगे लेकिन अभी हम इतना कहेंगे कि संभवतः पतरस ने इस पत्री को प्रथम सदी के सन् 60 के मध्य में लिखा होगा। यदि यह सत्य है तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि उसके कुछ पाठक एक दशक या उससे भी अधिक समय से मसीही हुए होंगे। इस समय उन्होंने यह देखा होगा कि कुछ लोगों ने मसीह को पीठ भी दिखा दी होगी। इसके साथ ही, जो लोग विश्वासयोग्य रहे होंगे उन्होंने भी अच्छा मसीही जीवन नहीं जीया होगा। कुछ तो निराश हुए होंगे; और उनका विश्वास डगमगा गया होगा। पतरस ने अपने पाठकों की सहायता करने के लिए यह पत्री लिखी होगी कि वे दुःख को अपने मसीही जीवन का हिस्सा बना लें। वे जिस प्रकार का दुःख सह रहे थे उसके लिए उसके पास कोई साधारण सा विश्लेषण नहीं था; लेकिन उसने उनको यह समझाना आवश्यक समझा कि परमेश्वर इस संसार में अपनी इच्छा पूरा करने के लिए कार्य कर रहा था। प्रेरित ने दृढ़तापूर्वक सुझाव दिया कि

कुछ घटनाओं में, दुःख आत्मिकता का साथी होने का प्रमाण था। चोखे धातु के समान, उसके पाठकों की परख अग्नि से हुई थी और उसमें से वे शुद्ध और परखे हुए निकले थे (1:7)।

प्रेरित की चिंता उसके भाइयों एवं बहनों के प्रति इसलिए भी थी क्योंकि उन्होंने यीशु को मसीह करके अंगीकार किया था और इसके बदले उनको एक बहुत भारी मूल्य चुकाना पड़ रहा था। उसके मन में इस बात की तनिक भी शंका नहीं थी कि परमेश्वर उनको दुःखों से बचा सकता था। परमेश्वर ने अपनी इच्छा के कार्य करने की रहस्य को क्यों नहीं छिपाया। जबकि परमेश्वर दुःख नहीं लाता है, लेकिन वह दुःखों के द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। परमेश्वर, मनुष्य के बलवा और पाप को यहाँ तक अनदेखा कर सकता था कि भक्तों के मध्य वह सताव को ईश्वरीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग कर सकता था। यीशु के दुःखों ने इस बात का उदाहरण छोड़ा (2:21; 3:17, 18; 4:13)। क्योंकि प्रभु ने स्वयं दुःख उठाया, तो कौन ऐसा सोचेगा कि उसके लोग भी सताए जाएंगे?

इस पत्री में पतरस ने चार बार अपने पाठकों के दुःख उठाने का वर्णन किया है (1:6-9; 3:13-17; 4:12-19; 5:9, 10)। यहाँ वचन यह नहीं बताता है कि विश्वासियों को दुःख दिया जा रहा है और उन्हें बंदीगृह में डाला जा रहा है। बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि वे बिना अपेक्षा के प्रतिशोध, असहिष्णुता, और अविश्वासी पड़ोसियों द्वारा और संभवतः अपने परिवार के लोगों के द्वारा दोषारोपण का शिकार हो रहे थे। पतरस ने अपने पाठकों द्वारा सहे जा रहे दुःखों का स्पष्टीकरण तो नहीं किया है, लेकिन इसको उसने इशारों में बताया है। 2:12 और 3:16 में उसने उनसे निवेदन किया है कि वे कुलीन और धर्मी जीवन बिताएं ताकि जब उन पर दोषारोपण लगाया जाता है तो दोष लगाने वालों को शर्मिंदगी सहने पड़े। यहाँ यह सुझाव दिया गया है कि अविश्वासियों द्वारा उन पर दोष लगाना उनके दुःखों का एक भाग है। 4:4 में उसने कहा कि उनके अविश्वासी पड़ोसी उनके व्यवहार देखकर आश्चर्यचकित हो गए थे कि किस प्रकार मसीहियों ने अन्य जातीय लोगों के व्यवहार से अपनी पीठ मोड़ ली थी। इसीलिए उनके पड़ोसियों ने उन पर दोष लगाया था।

पतरस के पाठकों का सताव जानलेवा नहीं जान पड़ रहा था और न ही यह अधिकारियों द्वारा उकसाया लग रहा था। फिर भी, पत्री से ऐसा लगता है कि इस सताव में सरकारी अधिकारियों का हाथ था। जब पतरस ने अपने पाठकों से यह निवेदन किया कि वे अपने अधिकारियों का आदर करें (2:13-17), तो ऐसी स्थिति में वह वास्तविक समस्या का संबोधन कर रहा था। हो सकता है कि कुछ मसीही रोमी शासन के खिलाफ रहे हों। मसीहियत एक नया मत था। अधिकारी संभवतः विश्वासियों की छान बीन कर रहे होंगे और किसी भी दुर्भाग्यपूर्ण घटना या अपराध का जिम्मा उन पर लाद देते होंगे। प्राचीन कालों में भी आधुनिक समाज के समान, नए धर्म को संदेह की दृष्टि से देखा जाता था।

ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता है जिसमें रोम के अधिकारियों ने मसीहियत के आरंभिक दिनों की बारीकी से छान बीन की हो। जहाँ तक सरकारी

अधिकारियों द्वारा सताव का मामला है तो यह स्थानीय अधिकारियों द्वारा ही किया जाता था और यह रोमी शासक या राज्यपालों के द्वारा नहीं किया जाता था। स्थानीय अधिकारियों ने संभवतः मसीहियों द्वारा निर्मित वस्तु या सामानों को बाजारों में बिक्री करने से रोक लगा दी थी या फिर सार्वजनिक सभा में भाग लेने से उन पर रोक लगा दी थी। आर्थिक संकट और सामाजिक निंदा, मसीहियों को सबके दृष्टि में बुरा बनाने के लिए पर्याप्त था। जितनों ने मसीह को ग्रहण किया था उन्हें यह पता चल गया था कि इसके बदले उनको दाम चुकाना पड़ा। पतरस ने ऐसे मसीहियों को जो शर्मनाक व्यवहार सह रहे थे, का सामना करने के लिए आत्मिक संसाधन लिखा। उसने उन्हें भविष्य में इससे भी बुरी परीक्षाओं का सामना करने के लिए तैयार रहने के लिए लिखा।

मसीही दुःख के अलावा 1 पतरस का बारीकी से अध्ययन एक और विषय वस्तु पर रोशनी डालता है जो लेखक के मन से कभी भी अलग नहीं हुआ था। यह सताव और दुःख से जुड़ा था, जो हमें पूरे नए नियम में दिखाई देता है। प्रेरित ने अपने पाठकों से निवेदन किया कि प्रभु का द्वितीय आगमन और उनकी महिमा निकट है (1:5, 7, 13; 2:12; 4:7, 13; 5:1, 4, 10)। जो भी नुकसान उनको पहुँचाया गया है उसका पलटा लिया जाएगा। प्रभु इस संसार का न्यायी होकर लौटेगा और उनका पलटा चुकाएगा। पतरस ने अपने पाठकों की खोई आशा को पुनर्जीवित करने के लिए यह पत्री लिखी (1:13)। प्रभु के द्वितीय आगमन का भरोसा ही उनकी सामर्थ्य का स्रोत था जो उनको उनके विश्वास के साथ मिले दुःख का सामना करने के लिए आवश्यक था (3:14)। पहला पतरस के दो एकात्म विषय वस्तु, प्रथम पाठकों के दुःख और प्रभु का द्वितीय आगमन है। जब प्रभु आएगा तो उनकी आशा की पूर्ति होगी और उनके आनंद की भरपूरी होगी (1:6-9)।

संभवतः निम्नलिखित कारणों से पतरस ने यह पत्री लिखी होगी : वह मसीहियों को पुनः आश्वासन दिलाना चाहता था कि जब वे मसीह के दुःखों में सहभागी होते हैं तो वे धन्य हैं (4:14, 16)। दुःखों की उम्मीद की जा सकती थी। ऐसी स्थिति में भी वे इसलिए स्थिर रह सकते थे क्योंकि वे उस रहस्य को जानते थे जिसे संसार नहीं जानता था; कि यीशु दोबारा प्रभु और न्यायी होकर प्रकट होगा (देखें 1:17; 4:17)। जब वह वापस आएगा तो वे छुड़ाए हुओं के आशीष में सहभागी होंगे। पतरस ने अपने पाठकों को आश्वासन दिया किया कि वे "[अपने] विश्वास का प्रतिफल अर्थात [अपने] आत्माओं का उद्धार प्राप्त करेंगे" (1:9)। पौलुस के समान, पतरस के लिए भी, "इस समय के दुख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं" (रोमियों 8:18)।

इन दोनों प्रमुख शीर्षकों के साथ पतरस ने मसीही जीवन से संबंधित अन्य मुख्य मामलों को भी संबोधित किया है। उसको यह चिंता था कि कहीं मसीहियों में दुःख कटुता न उत्पन्न कर दे। कटुता के बदले कहीं वे संसार से वैसे ही व्यवहार न करे जैसा संसार ने उनके साथ व्यवहार किया था। प्रेरित ने अपने पाठकों को बार-बार पवित्र और अच्छा जीवन जीने के लिए उत्साहित किया है (2:12;

3:8, 9, 17; 4:3, 15)। मसीहियों को झूठ और धोखाधड़ी का खुल कर सामना करना था। उनको घृणा और उपहास का प्रत्युत्तर कोमलता और मृदुलता से देना था (3:9)। पतरस ने सुझाव दिया कि यदि दुःख आता है तो यह मसीहियों के अन्यायपूर्ण व्यवहार के कारण नहीं आता है (3:17; 4:15)। संसार की घृणा और असहिष्णुता, उनके जीवन से अनुग्रह, समर्पण और सेवा जैसे गुण न मिटाने पाए। प्रेरित चाहता था कि उसके पाठक इस तथ्य को न भूलें कि वे पवित्र लोगों का समाज (1:14-16; 2:9), और परमेश्वर के भवन के जीविते पत्थर हैं (2:5)। यीशु के जीवन का अनुकरण करने के लिए पवित्रता होनी चाहिए जो उनके जीवन की सफलता का मापदंड है। यीशु ही उनके जीवन के सभी मामलों का नमूना, ὑπογραμμός *(हूपोग्रामोस)* है। उसके होंठों पर पाप नहीं था, उसने बदले में कुछ भी बुरा नहीं कहा (2:21-23)। विश्वासियों के होठों में भी पाप नहीं होना चाहिए, जब लोग उनके प्रति बुरा भला कहें तो उन्हें उसका बदला बुराई से नहीं देना चाहिए।

पत्री के लेखक

सुसमाचार के विवरणों में शिमौन पतरस का कद ऊँचा है। यीशु की कहानी में, पतरस की तुलना में कोई भी प्रेरित, यहाँ तक कि "उस चेले से जिस से यीशु प्रेम रखता था" (यूहन्ना 21:7), के बराबर न था। "पतरस" नाम सुसमाचार के विवरणों में लगभग सत्तर बार उल्लेखित किया गया है। इसके साथ ही छब्बीस स्थानों में, अधिकांश रूप से यूहन्ना रचित सुसमाचार में, "शिमौन" और "पतरस" नाम एक साथ उल्लेखित हुआ है। साधारणतया सत्रह बार शिमौन और एक बार कैफा करके उसे संबोधित किया गया है (यूहन्ना 1:42)। इसके विपरीत, प्रेरित यूहन्ना को नाम लेकर केवल बीस बार संबोधित किया गया है। यीशु के अलावा सुसमाचार में पतरस को छोड़कर कोई भी इतना महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखता है।

सुसमाचार के विवरणों में वर्णित उसकी कहानी, जल्द बाजी में कहे गए उसके शब्द, उसके डगमगाते विश्वास, साधारण मानवता और पश्चाताप की उसकी कहानी का वर्णन करने से मसीही लोग नहीं थकते हैं। यह पतरस ही था जो प्रभु की ओर पानी पर चला, लेकिन उसका विश्वास डगमगा गया था (मत्ती 14:28-33)। कैसरिया फिलिप्पी में पतरस ने दृढ़ता पूर्वक स्वीकारा कि "तू जीविते परमेश्वर का पुत्र मसीह है" (मत्ती 16:16), यद्यपि इसके कुछ समय उपरांत ही उसको झिड़की पड़ी थी (मत्ती 16:23)। जब प्रभु पर मुकदमा चल रहा था तो पतरस भी वहाँ उपस्थित था किन्तु वहाँ उसने इनकार किया कि वह यीशु नासरी को जानता है (मत्ती 26:69-75)। सदियों पुरानी पतरस की कहानी आज भी विश्वासियों को प्रेरणा प्रदान करती है।

सुसमाचार के विवरणों के समाप्त होने पर भी पतरस की कहानी समाप्त नहीं होती है। प्रेरितों के काम की पुस्तक के प्रथम अध्याय में हमारी भेंट परिवर्तित प्रेरित से होती है जिसने पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों के मध्य मुख्य स्थान ग्रहण

किया। यहूदियों के लिए राज्य का द्वार खोलते हुए उसने इस पुस्तक में लिखे प्रथम सुसमाचार का प्रचार किया (प्रेरित 2:14-36; देखें मत्ती 16:19)। इससे भी बढ़कर, उसने सबसे पहले कुरनेलियुस के परिवार को सुसमाचार का प्रचार कर अन्यजातियों के लिए भी विश्वास का द्वार खोल दिया (प्रेरित 10; 11)। प्रथम कलीसिया में उसकी प्रमुख भूमिका, उसकी खरी गवाही और यहूदी विरोधियों का दृढ़तापूर्वक सामना, मसीह ने किस प्रकार अपने शिष्यों को अपनी सामर्थ्य से भरा, का हमें स्मरण दिलाती है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में हम इस व्यक्ति को "पतरस" या "कैफा" नाम प्रदान करने में यीशु की बुद्धिमता देखते हैं (यूहन्ना 1:42), इन नामों का अर्थ यूनानी और अरामी भाषा में "चट्टान" है। लगभग तीन वर्ष की अवधि में यीशु ने इस ढुलमुल मछुवे को सामर्थ्य का गढ़ बना दिया था। यह केवल यीशु की कहानी में ही नहीं बल्कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में वर्णित प्रथम कलीसिया की कहानियों में भी शिमौन पतरस का ऊँचा स्थान है।

सुसमाचारों और प्रेरितों के काम की पुस्तक में पतरस की महत्वपूर्ण भूमिका होने पर भी यह जानकर आश्चर्य होता है कि नए नियम की पुस्तकों में इस प्रेरित की दोनों पत्रियों को कभी-कभी दर किनार या लगभग भुला दिया गया है।[2] इब्रानियों एवं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के मध्य होने के कारण, सार्वभौम पत्रियाँ (जिनको हम आमतौर पर सामान्य पत्रियाँ भी कहते हैं) याकूब, पतरस, यूहन्ना और यहूदा खोई हुई सी जान पड़ती है। संभवतः पौलुस की सामर्थशाली पत्रियाँ और मसीही शिक्षा विकसित करने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका ने पतरस की पत्रियों को धूमिल कर दिया होगा। इसकी भूमिका को जिस किसी कारण ने धूमिल कर दिया हो 1 पतरस एक महत्वपूर्ण मसीही धरोहर है। इस पत्री का प्रार्थना भाव स्थिति में अध्ययन करने से मसीही विश्वास की उन्नति होती है। इस पत्री का संदेश प्रथम सदी की संसार, जिसमें इसका उदभव हुआ, को प्रतिबिंब करता है।

पत्री का आरंभिक शब्द, जैसा हम सोचते हैं, इसके लेखक का परिचय देता है। यह पत्री "पतरस की ओर से है जो यीशु मसीह का प्रेरित है," लिखा गया है। इस गवाही पर आधारित और द्वितीय सदी की कलीसिया की गवाही पर, थोड़े विद्वान ही पतरस को, जिसे हमने सुसमाचार के विवरणों एवं प्रेरितों के काम की पुस्तक में देखा है, इस पत्री का लेखक, जिसमें उसका नाम उल्लेखित है, होने का संदेह व्यक्त करते हैं।[3] जैसे आशा की जा सकती है कि कुछ शकी लोग रहे होंगे जिन्होंने पतरस को इस पत्री का लेखक नहीं माना होगा, लेकिन उपलब्ध प्रमाण ही शिमौन पतरस को इस पत्री का लेखक ठहराते हैं जो कि आश्चर्यचकित करने वाली है।

जिन्होंने पतरस को इस पत्री का लेखक होने पर संदेह जताया है उनका तर्क यह है गलील के एक साधारण मछुआ से इस प्रकार की सर्वोत्तम साहित्य की आशा नहीं की जा सकती है। इसके साथ ही उनका यह तर्क भी है कि इस पत्री में सन् 60 की मध्य की झलकियाँ दिखाई देती है, जब कि उस समय तक पतरस की

रोम में मृत्यु हो चुकी थी।[4] इसके साथ ही, कुछ लोगों का तर्क यह है कि यदि प्रेरित पतरस इस पत्री का लेखक था तो उसने निश्चय ही प्रभु के साथ अपने संबंध को अपने पाठकों तक पहुँचाया होगा।

यह सत्य है कि 1 पतरस की यूनानी भाषा, नए नियम की अन्य पुस्तकों की भाषाओं में सबसे अच्छी है। फिर भी, हमें यह अनदेखा नहीं करना चाहिए कि पतरस ने सिलवानुस/सीलास को अपना लिपिक माना है (5:12)। सीलास का परिचय सबसे पहले प्रेरित 15:22 में दिया गया है। जबकि वह यहूदी मसीही है फिर भी उसका नाम पूरी तरह से यूनानी-रोमी संस्कृति से संबंधित है। अन्य जातीय मसीहियों को यरूशलेम कलीसिया के द्वारा लिखे हृदय स्पर्शी पत्र को पहुँचाने में सीलास की भूमिका (प्रेरित 15) और यह तथ्य कि उसने पौलुस को थिस्सलुनीकियों की दोनों पत्री लिखने में सहायता की थी (1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1) यह दर्शाता है कि वह एक ज्ञानी, पढ़ा लिखा मसीही था। यदि मामला यही है तो 1 पतरस लिखने में उसकी भूमिका के कारण ही इस पत्री की यूनानी भाषा सबसे अच्छी है।[5] यदि सीलास ने पतरस के लिए एक लिपिक की भूमिका निभाई हो, यदि उसने पतरस के लेख को पुनः अच्छे यूनानी गद्य में परिवर्तित किया हो, तौभी यह पत्री पतरस की ही है। क्योंकि सीलास एक भविष्यवक्ता था (प्रेरित 15:32), तो पतरस को व्यक्तिगत रूप से 1 पतरस के प्रेरणा के लिए उसको हरेक शब्द का उच्चारण करने की आवश्यकता नहीं थी।

पतरस का इस पत्री के लेखक होने के संबंध में अन्य बाधाओं के बारे में हम बहुत थोड़ा ही जानते हैं कि 1 पतरस में प्रथम सदी की आसिया की आदि कलीसिया की ऐसी कोई घटनाओं का विवरण नहीं मिलता है जो सन् 60 के मध्य के पश्चात् हुआ हो। जहाँ तक प्रेरित का प्रभु के साथ व्यक्तिगत संबंध का विवरण इसमें क्यों नहीं किया गया है उसके बारे में हम कुछ नहीं कह सकते हैं। फिर भी, ध्यान देने की बात यह है कि उसने अपने आपको "मसीह के दुःखों का गवाह" कहा है (5:1; देखें 2:22, 23)। और यही बहुत है। हमारे पास जो प्रमाण उपलब्ध है उसके आधार पर प्रेरित पतरस के इस पत्री का लेखक होने के बारे में संदेह करने का कोई कारण नहीं है।[6]

इस पत्री के पाठकों का स्थान

पौलुस का गलातियों और 1 कुरिंथियों में पतरस के बारे में संक्षिप्त उल्लेख को छोड़ दिया जाए तो नए नियम में पतरस का अंतिम उल्लेख प्रेरितों के काम 15 में पाया जाता है।[7] प्रेरित ने लगभग सन् 50 में तथा कथित यरूशलेम की सभा में भाग लिया था। इसके अलावा प्रेरितों के काम की पुस्तक में इससे अधिक कुछ नहीं पढ़ते हैं। प्रेरित सन् 50 और 67 ई. के मध्य सत्रह वर्ष तक, जो उसकी मृत्यु की अवधि रही होगी, क्या कर रहा था? पौलुस की कुरिंथियों के नाम प्रथम पत्री में पतरस का उल्लेख पाया जाता है। कुरिंथुस में विभिन्न दलों के मध्य एक

दल ऐसा भी था जो अपने आपको "कैफा" के दल का बताते थे (1 कुरिंथियों 1:12)। क्या पतरस कुरिंथुस में रहा था? पौलुस निश्चित रूप से यह तो नहीं कहता है कि वह वहाँ था। कैफा के दल को यरूशलेम या अन्य स्थानों से यहाँ लाया गया होगा। इसके साथ हम यह भी देखते हैं कुरिंथुस में एक और दल था जो अपने आपको "मसीह" का कहता था। स्पष्ट है कि यीशु, कम से कम शारीरिक रूप से तो इस नगर में नहीं आया था। यह अनिश्चित है कि पतरस स्वयं कुरिंथुस गया था लेकिन पौलुस का संकेत यही दर्शाता है कि पतरस पलिस्तीन के बाहर भी कार्य कर रहा था। पहला कुरिंथियों 9:5 यह प्रमाणित करता है कि पतरस भी पौलुस के समान एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करने वाला मिशनरी बन गया था।

अब हम थोड़ा भरोसे के साथ कह सकते हैं कि पतरस ने आसिया में समय बिताया था। उसने चार बड़े रोमी प्रदेशों को, जो अब तुर्की का अधिकांश भाग है, अपनी पत्री में संबोधित किया है। जबकि 1 पतरस 1:1 में पुन्तुस और बिथुनिया के नामों का अलग सूची प्रस्तुत की गई है, लेकिन ई.पू. प्रथम सदी के मध्य तक जब पोम्पी ने इस क्षेत्र को पुनः स्थापित किया तो उसने इन दोनों प्रदेशों को एक रोमी प्रदेश के रूप में विलय कर दिया था। यह संभव है कि पतरस ने इस क्षेत्र में फैली कलीसियाओं को पत्री लिखी क्योंकि उसको इन क्षेत्रों का प्रथम दृष्टि ज्ञान था। हो सकता है कि पतरस और पौलुस की मिशनरी यात्रा लगभग उसी समय रही होगी। यदि पतरस और उसके सहयोगियों ने आसिया के क्षेत्रों में कलीसिया की स्थापना की होगी तो उसने अपने पत्री में उनको इस प्रकार संबोधित किया होगा, "उन परदेशियों के नाम जो पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, आसिया और बिथुनिया में तितर-बितर होकर रहते हैं" (1:1)।

जिस क्रम में इन प्रदेशों की सूची बनाई गई है वह महत्वपूर्ण है। सिलवानुस/सीलास (5:12) या किसी अन्य मसीही संदेशवाहकों ने जहाज से यूनानी नगर सिनोपे का रास्ता तय किया होगा, जो उत्तरी मध्य पुन्तुस के काला सागर के किनारे स्थित था। वहाँ से संभवतः उसने दक्षिण की ओर गलातिया प्रदेश का मार्ग लिया होगा, फिर वहाँ से दक्षिण-पूर्व का मार्ग लेकर कप्पदुकिया पहुँचा होगा, फिर पश्चिम की ओर आसिया का मार्ग लिया होगा और फिर उत्तर की ओर बिथुनिया आया होगा, जहाँ से उसने फिर से जहाज लिया होगा। (अगले पृष्ठ का नक्शा देखें)। जहाँ कहीं यह संदेशवाहक गया होगा उसको वहाँ मसीही लोग मिले होंगे जिनको उसने पतरस का वचन पढ़कर सुनाया होगा। यह अति महत्वपूर्ण है कि इन आरंभिक दिनों में भी आसिया के अलग-अलग क्षेत्रों में मसीही पाए जाते थे।

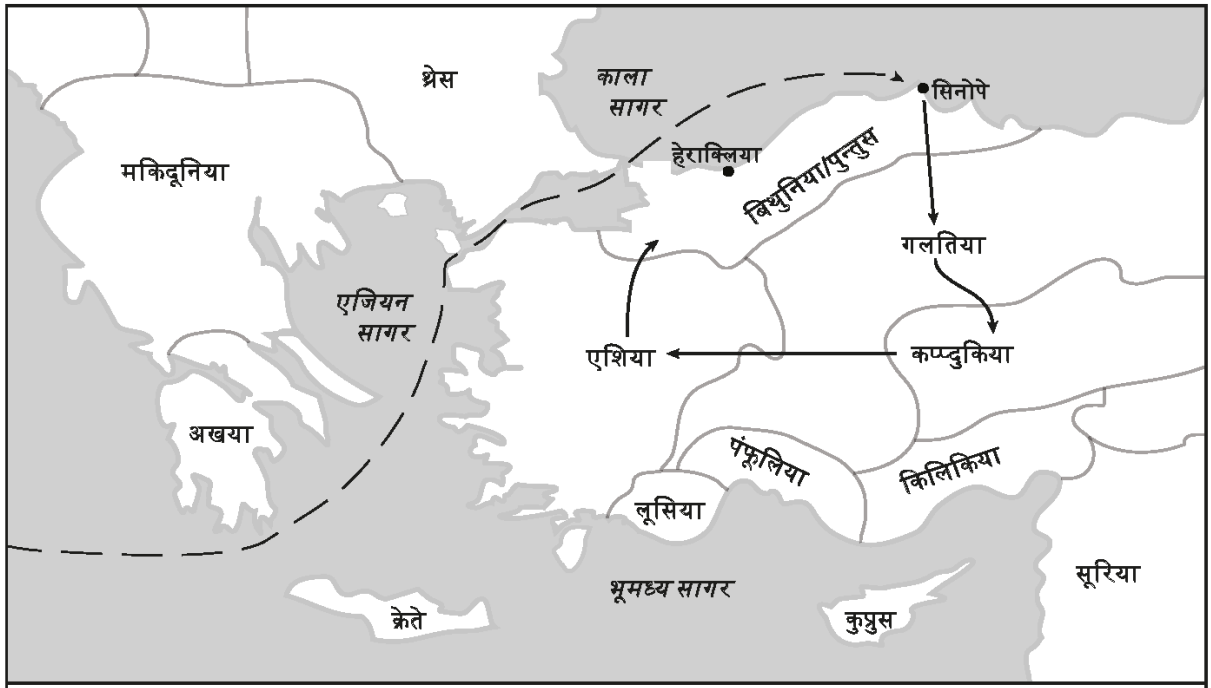

एशिया माईनर में 1 पतरस का प्रसार

जिन प्रदेशों को पतरस ने संबोधित किया है वे एक बहुत विशाल भौगोलिक क्षेत्र था। वहाँ के लोग विभिन्न सामाजिक, जन जातीय, और भाषा समूह के थे। बढ़ते रोमी साम्राज्य के प्रभाव में, पश्चिमी प्रदेश, आसिया और बिथुनिया, के अंतिम राजाओं ने, मसीहियत के आगमन से पूर्व, रोम से वसीयत कर ली थी। युद्ध में जीतकर पुन्तुस, गलातिया और कप्पदुकिया का रोमी साम्राज्य में विलय हो गया था।

पहली बार ई.पू. 133 में जब रोमियों ने आसिया को रोमी साम्राज्य में मिलाया तो इन प्रदेशों ने दुष्ट रोमी कर संकलनकर्ताओं के हाथों बहुत दुःख उठाया। जब रोमी साम्राज्य का विरोध करने का अवसर आया तो इन प्रदेशों के लोगों ने इसका लाभ उठाया। ई.पू. 88 के दो दशक बाद, पुन्तुस के राजा मिथ्रीडेट्स VI ने इस क्षेत्र पर चढ़ाई कर दी। इस दौरान आसिया के अधिकांश नगरों ने रोम के विरूद्ध खड़े होकर पुन्तुस के राजा का साथ दिया। ई.पू. 60 के दशक में रोमी सिनेट ने पोम्पी को मिथ्रीडेट्स को दंडित करने का अधिकार दिया। रोमी सेनापति ने पुन्तुस के राजा को बाहर निकाला, आसिया के दक्षिणी समुद्र तट पर विदेशी समुद्री डाकुओं का दमन किया और फिर से उसने इस क्षेत्र को लगभग उसी क्रम में आयोजित किया जिस समय पतरस ने उनको पत्री लिखी थी। जिन नगरों ने मिथ्रीडेट्स का समर्थन किया था उनके साथ रोम ने बरबरतापूर्वक बर्ताव किया। ई.पू. 75 में बिथुनिया के अन्तिम राजा ने अपने राज्य और नागरिकों के साथ सिनेट के समक्ष समर्पण किया।

आसिया के नगर मिथ्रीडेट्स के पश्चात् शांति की चाह करने लगे लेकिन उनको शांति नहीं मिली। ई.पू. 44 में कैसर की हत्या के बाद गृह युद्ध छिड़ गया। रोमी सेनापति और राजनेताओं ने अपनी सेनाओं को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए बरबरतापूर्वक आसिया के नगरों को कर देने के लिए विवश किया। जब युद्ध थम गया तो ई.पू. 27 में अगस्तुस शासक बना। यह वही शासक है जिसने रोम के युद्ध देवता के मंदिर के द्वार बंद कर दिए और पैक्स रोमाना (रोम की शांति) की स्थापना की। अगस्तुस ने कर लेने की कठोर नीतियों को समाप्त किया और उसने आसिया और बिथुनिया के नगरों को सरकार बनाने में सहायता की। थके मांदे आसिया वासियों ने उसे देवता तुल्य माना। अगस्तुस के शासन और 1 पतरस के लिखे जाने के एक सौ साल के समय काल में आसिया पुनः सर्वसम्पन्न हो गया और यह इस साम्राज्य के बहुमूल्य रत्नों में से एक था।

आसिया और बिथुनिया/पुन्तुस के राज्यपाल सिनेट नियुक्त करते थे। वे सूबेदार कहलाए क्योंकि वे राजदूत (proconsuls), रोम में स्थित मुख्य प्रशासनकर्ता के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते थे। सूबेदार एक वर्ष के लिए नियुक्त किए जाते थे। जब वे अधिकार में रहते थे तो वे अधिक धन उपार्जन की अपेक्षा करते थे बल्कि वे धनाढ्य भी हो जाते थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में दो सूबेदार सिरिगयुस पौलुस (13:7) और गल्लियो (18:12) का वर्णन पाया जाता है। प्राचीन शांति प्रिय प्रांत जैसे आसिया और बिथुनिया/पुन्तुस सिनेट के आधीन के प्रांत कहलाए क्योंकि वे रोमी सिनेट के प्रशासन के आधीन थे। दोनों प्रांतों में

यूनानी बोले जाने वाले कई नगर थे। प्रथम सदी में रोमी सिनेट के लिए आसिया का सूबेदार होना ही सबसे बड़ी उपाधि मानी जाती थी।

कुछ समय के लिए गलातिया और कप्पदुकिया पर सहयोगी रोमी शासकों ने वैसा ही शासन किया, जैसा हेरोदेस ने भी पलिस्तीन में रोमी सहयोगी राजा के रूप में राज्य किया था। ई.पू. 25 में गलातिया का रोमी साम्राज्य में विलय हो गया। कप्पदुकिया का भी ई. सन् 17 में यही हाल हुआ। गलातिया और कप्पदुकिया प्रांत सम्राट के आधीन हो गए। क्योंकि वे रोमी साम्राज्य सीमा के निकट थे तो रोमी सेना इन प्रांतों में या इनके निकट ठहरा करती थी। सेनाओं की वफादारी सम्राट के प्रति था न कि रोमी सिनेट के। सम्राट ने अपने व्यक्तिगत प्रतिनिधियों को गलातिया और कप्पदुकिया में शासन करने के लिए भेजा। वे सम्राट के प्रांत कहलाए।

गलातिया नाम गॉल जनजाति से आया है जो ई.पू. द्वितीय सदी में इस प्रांत के उत्तर की ओर बस गए थे। इस प्रांत के दक्षिणी भाग में अन्ताकिया एवं लुस्त्रा नामक नगर था जिनकी पहचान सरकार और भाषा के कारण यूनानी-रोमी हो गई थी। कप्पदुकिया पिछड़ा क्षेत्र था। इस प्रांत में कोई भी महत्वपूर्ण यूनानी-रोमी नगर नहीं था। अधिकांश कप्पदुकिया के लोग जन जातीय इलाकों से सटे गांवों में रहते थे।

सामान्यता रोमी राज्यपाल, चाहे सूबेदार हो या सम्राट का प्रतिनिधि, रोमी साम्राज्य के साधारण लोगों के दिनचर्या में सामान्य भूमिका निभाते थे। नगर अपने सार्वजनिक भवनों का स्वयं रखरखाव करते थे, उनकी अपनी सिपाही थी और सार्वजनिक कार्य तथा रोम को कर देने के लिए लोगों से कर लेते थे। विभिन्न समितियाँ उनका निरीक्षण करती थी, एक सार्वजनिक कार्य के लिए, दूसरा व्यापार का ध्यान रखने के लिए, और इसी प्रकार कई अन्य समितियाँ थीं। जब तक नगर में शांति बनी रहती थी और रोम को कर मिलता रहता था, तब तक इन नगरों में रोम का बहुत कम हस्तक्षेप होता था। आसिया और बिथुनिया/पुन्तुस जैसे समृद्धिशाली प्रांतों की सीमा में कोई सेना नहीं होती थी और बहुत थोड़े रोमी सिपाही होते थे। यह कि रोम शक्तिशाली है और वह अपनी शक्ति का प्रयोग करने में नहीं हिचकीचाता था, का ज्ञान ही स्थानीय लोगों को रोम की मांग जल्दी से मानने के लिए मौन रखता था। पतरस के शब्द जो 2:13-17 में लिखा गया है वह सरकार के बहु-परत कार्य प्रणाली के विपरीत है। कुछ रोमी शासकीय अधिकारी थे तो कुछ स्थानीय अधिकारी थे।

पहला पतरस की आरंभिक आयतों में संबोधित इस प्रांत की संस्कृति, धर्म और आर्थिक व्यवस्था में भिन्नता थी। नगरों में जगह-जगह यूनानी संस्कृति पाई जाती थी। आसिया और बिथुनिया और पुन्तुस के समुद्री किनारे कई समृद्धशाली नगर बसे थे। गलातिया और कप्पदुकिया के केन्द्रीय भाग में थोड़े और छोटे नगर थे। यह कहना तर्क संगत होगा कि पतरस ने भी पौलुस के समान मसीह का प्रचार अलग-अलग नगरों में जाकर किया। व्यापार मार्ग पर स्थित नगरों में यहूदी आराधनालय होता था जहाँ सुसमाचार सुनाने के लिए लोग मिल जाते थे।

जबकि प्रथम मसीही, यहूदी आराधनालयों में से आये थे, लेकिन कुछ भक्त गैर यहूदी भी उनका अनुकरण करते थे, कुछ मामलों में वे यहूदी मत का आदर करते थे और इससे पहले कि उनकी भेंट मसीही शिक्षकों से हुई वे यहूदी आराधनालय अक्सर जाया करते थे। पतरस के शब्दों से यह स्पष्ट है कि उसके कुछ पाठक अन्य जातीय पृष्ठभूमि से संबंधित थे (1:14, 18)।

पतरस के पाठक जिन लोगों के मध्य रहते थे उनमें से अधिकांश लोग अनेक देवी देवताओं को मानते थे। उनमें से कुछ तो पारंपरिक यूनानी देवी देवता थे, लेकिन अन्य स्थानीय देवता जैसे मा, मेन, या सिबिल इत्यादि विचित्र नामों से प्रचलित थे। कुछ हद तक धार्मिक रीति रिवाजों में जादू-टोना और अंधविश्वास पाया जाता था। प्राचीन संसार के कई ऐसे प्रमाण हैं जो यह बताता है कि पतरस ने जिन स्थानीय लोगों को संबोधित किया है उनके मध्य अंधविश्वास अति प्रचलित था। सब जगह पवित्र झरना, पवित्र वृक्षवाटिका, और स्थानों पर भटकती दुष्टात्माएं और आत्माएं पाई जाती थीं। कुछ स्थान ऐसे भी थे जहाँ लोगों को चंगाई मिलती थी। अन्य स्थानों पर कोई भी अपने शत्रुओं के लिए स्लेट पर श्राप लिखकर भूमि पर गाड़ देते थे और यह आशा करते थे कि अलौकिक आत्माएं उसके लिए यह कार्य करेंगी। नए नियम के विद्यार्थियों को स्मरण होगा कि पौलुस के प्रचार के प्रभाव के कारण इफिसुस के नागरिकों ने बड़ी संख्या में अपनी जादू की पुस्तकें लाईं और उन्हें जलाया (प्रेरित 19:19)।

आसिया के समुदायिक जीवन में देवताओं की उपासना का ताना बाना पाया जाता है। देवताओं को समर्पित बलिदान, त्यौहार या क्रीड़ा से अलग रहना सार्वजनिक अपराध समझा जाता था। मसीही लोग जब ताण्डव अनुष्ठान या बलिदान संस्कार में भाग लेने से इनकार करते थे तो उनका अन्य जातीय समाज से सीधा टकराव होता था। बाजार में फसल बेचना या छोटा व्यापार जैसे चमड़े का उद्योग या बर्तनों की दुकान चलाना मसीहियों के लिए कठिनाई उत्पन्न कर सकता था।

पतरस जिस संसार को जानता था उसमें मसीहियत नया और विचित्र मत था। विश्वासियों को लोगों की दृष्टि से बचने में कठिनाई होती थी। जब कभी उस क्षेत्र में अवर्णित चोरी या मृत्यु होती थी तो अन्य जातीय समाज इसका दोष नए मत पर मढ़ देते थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मसीही लोग इसके शिकार होने लगे। जब भूकंप या अकाल आता था तो मसीहियों को इसका दोषी ठहरा दिया जाता था क्योंकि उन्होंने देवी देवताओं को बलिदान चढ़ाने से इनकार किया था। मसीहियों का दुःख, जो 1 पतरस का मूल विषय-वस्तु है, किसी के भी होश उड़ा सकता है जब यह उस संसार के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है जहाँ ये विश्वासी रहते थे।

तिथि तथा पत्री लिखने का स्थान

पतरस ने कहाँ से इस पत्री को लिखा होगा का एकमात्र संकेत 5:13 में

पाया जाता है, जहाँ वह यह कहता है, "जो बेबीलोन में तुम्हारे समान चुने हुए लोग हैं, ... तुम्हें नमस्कार कहते हैं।" सामान्यतः हम इस वक्तव्य का यह अर्थ निकाल सकते हैं कि पतरस जब इस पत्री को लिख रहा था तो वह उस स्थान पर था जिसे वह बेबीलोन कहता है। इसका यह अर्थ है कि उस स्थान पर पतरस के सहयोगी इस पत्री के पाठकों को नमस्कार कहते हैं (5:13 की टिप्पणी देखें)। बेबीलोन महा नदी के तीर पर, उस साम्राज्य के केन्द्र में बसा एक प्रसिद्ध नगर था जिसने यरूशलेम को ई.पू. 587 में नाश किया था और यहूदी लोगों को बंधुआई में ले गया था। पहली प्रवृति उस प्रसिद्ध नगर के लिए "बेबीलोन" शब्द को उसी रूप में लेने की है। लेकिन, इस नाम को शाब्दिक अर्थ में स्वीकार करने से कई समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

आदि कलीसिया की परंपरा, पतरस को रोमी साम्राज्य के पश्चिमी भाग से जोड़ती है न कि पूर्व से। बेबीलोन सुदूर पूर्व में बसा था। इसके साथ ही जबकि प्राचीन संसार के प्रमाण बहुत थोड़े उपलब्ध हैं, तौभी ऐसा प्रतीत होता है कि जब पतरस ने यह पत्री लिखी होगी तो उस समय बेबीलोन कोई साधारण गाँव नहीं रहा होगा।[8] जब हमें प्रेरित यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य 18:2 में रोम के विनाश के लिए बेबीलोन का संकेत मिलता है तो हम यह समझ लेते हैं कि 1 पतरस में उल्लेखित बेबीलोन को शाब्दिक रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। मसीहियों का पुराने नियम से अच्छा परिचय होने के कारण उनके लिए बेबीलोन शत्रुता, अभक्ति, कामुकता और सताव का प्रतीक बन गया था।[9] प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना के समान, पतरस ने भी रोम को बेबीलोन जैसा नैतिक और आत्मिक पतन के समतुल्य पाया। यह संभव है कि जिस तरह आज हम न्यू यॉर्क शहर की पहचान द बिग एप्पल से करते हैं ठीक उसी तरह पतरस के पाठकों ने भी बेबीलोन की पहचान रोम से की होगी।

संक्षिप्त में हम यह देख सकते हैं कि सुधारवादी युगों में जो रोमन कैथोलिक को पसंद नहीं करते थे, यह तर्क देते हैं कि पतरस कभी भी रोम नहीं गया था और इस बात से सहमत नहीं थे कि पतरस रोम का प्रथम पोप था। सुधारवादी युग में कुछ लोगों ने 1 पतरस 5:13 में उल्लेखित "बेबीलोन" शब्द को शाब्दिक रूप में लिया और कहा कि पतरस ने इस पत्री को प्रथम सदी के संसार के पूर्वी भाग से लिखा था। यह विचार धारा आधुनिक युग में भी कुछ सीमा तक प्रचलित है। फिर भी, प्रमाण इसके विपरीत है। दूसरे प्रमाणों के मध्य सीलास और मरकुस (5:12, 13) ऐसे नाम हैं जो पाश्चात्य कलीसिया से संबंधित है। जब पतरस की मृत्यु का वर्णन प्रथम चार सदियों के समान विचार धाराओं वाले लेखक करते हैं तो उनका मत है कि उसकी मृत्यु रोम में हुई है।

चौथी सदी में कलीसिया के इतिहासकार यूसेबियुस के अनुसार पतरस और पौलुस को लगभग उसी समय मौत के घाट उतारा गया होगा जब नीरो रोम का सम्राट था। नीरो ने सन् 68 ई. में आत्म हत्या कर ली थी। हाँ यह कहना कठिन होगा कि कब तक पतरस रोम में था, लेकिन उसके लिए वहाँ तब तक रहना आवश्यक था जब तक कि वह आसिया में दुःख भोग रहे मसीहियों के बारे में पूरी

जानकारी प्राप्त नहीं कर लेते। स्पष्ट रूप से उसके पाठकों का मसीही बनने के बाद कुछ समय बीत चुका था लेकिन सताव प्रारंभ होने के लिए अधिक दिन नहीं बीते थे। इस बात का कोई संकेत नहीं है कि सताव रोम से प्रारंभ हुआ होगा; क्योंकि पूरे साम्राज्य में अब तक मसीहियों पर सार्वजनिक सताव प्रारंभ नहीं हुआ था। फिर भी, निस्संदेह मसीही लोग बहिष्कार और आर्थिक तंगी अनुभव कर रहे थे जो संभवतः नए मत के प्रति स्थानीय असहिष्णुता के कारण हुआ होगा। अंततः, पतरस ने जिन कलीसियाओं को संबोधित किया था उनको अपने अगुवे चुनने में परिपक्व होने के लिए समय भी लगा होगा (देखें 5:1)। जबकि हम निश्चित रूप से इस पत्री के लिखे जाने की तिथि के बारे में ठीक-ठीक नहीं बोल सकते हैं तौभी यह अनुमान लगाया जा सकता है कि 1 पतरस ई. 65 के निकट लिखा गया होगा।

पत्री की संरचना

संबोधन के बाद (1:1, 2), पतरस ने अपने और अपने पाठकों के मस्तिष्क को छुटकारा, आशा, और प्रतिज्ञा के विचारों से जकड़ा, जिसने उन्हें कठिन घड़ी में सहारा दिया। एक के बाद दूसरा वाक्यांश, पाठकों को अंत के दिनों, एवं अंतिम घड़ी, जब आशा पूरी की जाएगी, पर चिंतन करने के लिए विवश करता है: "जीवित आशा के लिये नया जन्म दिया" (1:3), "एक अविनाशी, और निर्मल, और अजर मीरास" (1:4), "आनेवाले समय में प्रगट होनेवाली है" (1:5), "आत्माओं का उद्धार" (1:9), "इसी उद्धार" (1:10), "यीशु मसीह के प्रगट होने के समय" (1:13), "अपने परदेशी होने का समय" (1:17), "तुम्हारा छुटकारा चाँदी-सोने अर्थात् नाशवान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ" (1:18), "इस अन्तिम युग में" (1:20), "तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो" (1:21) का बार-बार उल्लेख किया गया है।

इस पत्री का प्रथम मुख्य भाग 1:3-2:10 है। पतरस चाहता था कि उसके पाठक यह जाने कि मसीह को अपनाने का क्या अर्थ है। इससे पहले कि वे उसे जानते, वे अपनी शारीरिक अभिलाषा के वश में होकर अज्ञानता में रह रहे थे (1:14)। मसीह में वे चुने हुए वंश, परमेश्वर की निज प्रजा हो गए थे (1:1, 2; 2:9, 10)। क्योंकि अब उन्होंने नया जन्म पा लिया था, तो उनके पास अब एक मिशन, उद्देश्य, और अंत (भविष्य की आशा) था। वे अपने पुराने जीवन की व्यर्थता से छूट गए थे और अब वे मसीह से मिलन की आस लगाए बैठे थे।

मसीह के पुनरागमन पर अपने पाठकों को उनकी आशा की पूर्ति का स्मरण दिलाकर, पतरस ने अब अपना ध्यान आत्मिक उन्नति की ओर लगाया जो उसके पाठकों को संपूर्ण मसीही जीवन जीने के लिए प्रेरित करेगा। पत्री का यह भाग, 2:11-4:11, याकूब की पत्री के समान, आदेशों से भरपूर है : "तुम्हारा चाल-चलन भला हो" (2:12); "प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो" (2:13); "अपने आप को स्वतंत्र जानो" (2:16); "सब का आदर

करो" (2:17); इत्यादि। यहाँ ऐसा नहीं है कि प्रभु के पुनरागमन को इस भाग में भुला दिया गया है (2:12; 4:7)। प्रभु का पुनरागमन ही इस भाग की नींव है जहाँ से पतरस ने उन्हें आत्मिक उन्नति के लिए उत्साहित करना प्रारंभ किया। ऐसा नहीं है कि पतरस ने यहाँ अपने पाठकों के दुःखों को कम आंका (3:13, 14)। दुःख, नवीनीकृत विश्वासयोग्यता की बुलाहट का आधार है (3:15)।

पत्री के अंतिम भाग 4:12-5:11 में, पतरस उसी विषय वस्तु पर लौट आता है जिसे उसने 1:3-2:10 में संबोधित किया था। नवीनीकृत जोश के साथ दुःख पटल पर आता है। अन्य दस्तावेजों के अंत में पाए जाने वाले आशीर्वाद वचन के समान, चूँकि 4:11 भी समाप्त होता है, और क्योंकि 4:12-5:11 की भाषा शैली अत्यंत दुःख की ओर संकेत करती है, तो कुछ लोगों ने यह सुझाव प्रस्तुत किया है कि पतरस अपनी पत्री को 4:11 में ही समाप्त करना चाहता था। एक विद्वान ने तो यह कहा कि 1 पतरस के दो संस्करण थे। पहला संस्करण उन मसीहियों के लिए था जिन्हें कम दुःख उठाना पड़ा था। उन मसीहियों को 1 पतरस 1:1-4:11 मिला। दूसरा संस्करण उन मसीहियों को मिला जिन्हें घोर दुःखों का सामना करना पड़ रहा था। उनको 1 पतरस 1:1, 2 और 1 पतरस 4:12-5:14 मिला।[10] अन्य लोगों का तर्क यह है कि जब पतरस ने पत्री लिखना समाप्त किया, तब उसको अपने पाठकों के घोर दुःख के बारे में सूचना मिली। इस सूचना के साथ फिर से उसने पत्री लिखना प्रारंभ किया और उसने 4:12-5:11 को उत्तरार्ध लेख के रूप में जोड़ा।[11] जबकि दोनों सुझाव विचारणीय हैं, परंतु जिन परिस्थितियों में पतरस ने यह पत्री लिखी उसके आधार पर निश्चित निष्कर्ष निकालने के लिए हमारा ज्ञान बहुत सीमित है। यह स्पष्ट है कि 1 पतरस 4:12-5:11, पतरस के पाठकों का दुःख इस तन्मयता से हमारे सम्मुख प्रस्तुत करता है जो पहले इस पत्री में नहीं पाया जाता है।

पतरस ने अपने पाठकों को आश्वासन दिया कि उनमें से कोई भी मसीही होने के कारण दुःख उठाने से न शर्माए (4:16)। नए नियम में तीन बार प्रयोग हुए "मसीही" शब्द में से यह एक है (देखें प्रेरित 11:26; 26:28)। इस प्रकार के बाहरी दबाव में मसीहियों को कैसा व्यवहार करना चाहिए? "वे भलाई करते हुए अपने-अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृजनहार के हाथ में सौंप दें" (4:19)। प्रेरित ने अगुओं को सहायता प्राप्त हो सके संबंधी शब्दों का निर्देश यहाँ जोड़ा (5:1-4), उसने अपने पाठकों को नम्रता और शालीनता से व्यवहार करने के लिए उत्साहित किया (5:5-11), और उसके पश्चात् उसने अपनी पत्री समाप्त की (5:12-14)। निम्न रूपरेखा इस पत्री का विश्लेषण करने में सहायक सिद्ध होगी।

रूपरेखा

I. नमस्कार: जो पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र किए गए हैं (1:1, 2)

II. उद्धार, विश्वास का परिणाम (1:3-2:10)

A. “जीवित आशा के लिए नया जन्म” (1:3-5)
B. “विभिन्न परीक्षाओं के कारण दुःख” (1:6-9)
C. भविष्यवक्ताओं के द्वारा दिया जाना (1:10-12)
D. पवित्र लोग (1:13-16)
E. भय के साथ जीना (1:17-21)
F. अविनाशी बीज से जन्म (1:22-25)
G. “नए जन्में बच्चों के समान” (2:1-3)
H. मसीह, एक जीवित पत्थर; मसीही, एक आत्मिक घर (2:4-8)
I. अंधकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया (2:9, 10)

III. परमेश्वर के दुःख उठाने वाले लोगों के समान व्यवहार करना (2:11-4:11)
A. “परदेशी और यात्री” (2:11, 12)
B. समर्पण: मसीही जीवन का अनिवार्य भाग (2:13-3:7)
1. प्रबंध के आधीन (2:13-17)
2. स्वामी के आधीन (2:18-20)
3. मसीह का क्रूस पर समर्पण (2:21-25)
4. पत्नियों का अपने पतियों के आधीन होना (3:1-6)
5. पतियों को अपने पत्नी का आदर करना (3:7)
C. जो धर्म के लिए सताए जाते हैं उनको आशीष (3:8-17)
1. परमेश्वर की आशीष के लिए पवित्र जीवन की मांग (3:8-12)
2. मसीह को अपने-अपने मनों में पवित्र जानना (3:13-17)
D. हमारे पापों के कारण मसीह की मृत्यु (3:18-22)
E. शरीर के विरूद्ध अपने आपको तैयार करना (4:1-3)
F. अन्यजातियों का लेखा (4:4-6)
G. सब बातों का अंत (4:7-11)

IV. मसीह के दुःखों में सहभागी होना (4:12-5:11)
A. मसीह के दुःखों में सहभागी होना (4:12-16)
B. विश्वासयोग्य सृजनहार को अपना प्राण सौंपना (4:17-19)
C. प्राचीनों को प्रोत्साहन (5:1-4)
D. दीनता से अपने आपको संवारना (5:5-8)
E. पूरे संसार में भाईचारा (5:9-11)

V. अंतिम टिप्पणी (5:12-14)

अनुप्रयोग

मसीही लोग जानना चाहते हैं कि कैसे 1 पतरस का संदेश उनके जीवन को प्रभावित करता है, उनके विश्वास में योगदान प्रदान करता है, और उनको पाप से मन फिराकर धर्मी जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार का पाठ 1 पतरस के विषय वस्तु से एक के बाद दूसरे आयत और यहाँ तक कि एक शब्द से दूसरे शब्द में प्रवाहित होता है। इसके साथ ही 1 पतरस का कुछ पाठ पूरी पत्री की परीक्षण के पश्चात ही मिलता है।

प्रभु का पुनरागमन

नए नियम का कोई भी लेखक प्रभु के पुनरागमन से संबंधित घटनाओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत नहीं करता है। बल्कि, पतरस और अन्य लेखकों ने मसीहियों से निवेदन किया है कि वे उसके पुनरागमन के आशय को गंभीरता और विचारपूर्वक समझें।

1. क्योंकि प्रभु वापस आएगा, इसलिए जीवन की कुंठा, चिंता और निराशा को आसानी से वहन किया जा सकता है। जब शरीर बूढ़ा होता है, जब पाप को अलग करने में कठिनाई होती है, जब संसार में सर्वाधिक घृणा और कड़वापन फैल रहा है, तो ये सभी समाप्त हो जाएंगी। जीवन की परीक्षाएं कुछ ही समय के लिए है। जिन्होंने मसीह पर विश्वास किया है उनके लिए अनंतकाल प्रतीक्षा कर रहा है (1:6)।

2. क्योंकि प्रभु वापस आएगा, तो यह इस बात पर भी प्रभाव डालेगा कि क्या कोई आवश्यकता में पड़े अपने पड़ोसी की सहायता करता है या नहीं। इसका इस बात पर भी प्रभाव पड़ेगा कि क्या कोई सत्य बोलता है कि नहीं और दूसरों के साथ भला व्यवहार करता है कि नहीं। जीवन को अर्थ और दिशा मिल जाती है क्योंकि यह निशाने की ओर दौड़ा चला जा रहा है।

3. क्योंकि प्रभु वापस आएगा, तो मसीहियों को यह आश्वासन है कि परमेश्वर संसार की कार्यप्रणाली पर सीधा हस्तक्षेप करेगा। वह अपने बच्चों को नहीं छोड़ेगा और न ही त्यागेगा (5:7)। मसीही लोग मसीह के प्रथम और द्वितीय आगमन के बीच में रहते हैं। अभी उनको राज्य मिला है, जबकि एक और राज्य है जिसका अभी प्रकट किया जाना बाकी है।

दुःख और आनंद

न तो 1 पतरस और न ही बाइबल की कोई अन्य पुस्तक इस बात का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करती है कि क्यों कभी-कभी निर्दोष लोगों को दुःख उठाना पड़ता है। पहला पतरस मसीहियों को कुछ बातें ध्यान में रखने के लिए निर्देशित करता है।

1. अच्छे लोग अपने अपराध के कारण दुःख नहीं उठाते हैं बल्कि शैतान के कारण जिसने संसार को प्रभावित किया है। शैतान लोगों को फाड़ खाने के लिए

ढूँढता रहता है (5:8)। संसार का अधिकांश भाग दुष्ट के जाल में फंसा है। तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि जिन्होंने अपने आपको को दुष्ट के वश में कर दिया है वे मसीहियों का विरोध करते हैं और उनको जिन्होंने अपने आपको मसीह की भलाई के प्रति समर्पित किया है सताते हैं।

2. कुछ दुःख तो पाप का सीधा परिणाम है। जब ऐसी बात हो तो मसीहियों को पश्चाताप करना चाहिए। परमेश्वर, जो दया का धनी है, क्षमा करेगा। कुछ मामलों में जब परमेश्वर के बच्चे पश्चाताप करते हैं और उसके पास लौट आते हैं तो वह इस जीवन में उनके दुःखों को उनसे हटा लेता है। पतरस ने अपने पाठकों से निवेदन किया कि वे ऐसा जीवन जीएं ताकि वे कभी भी अपराध के लिए दुःख न उठाएं (2:11, 12; 4:15, 16)।

3. जब मसीही लोग दुःख उठाते हैं तो वे स्वयं यीशु के उदाहरण का अनुकरण करते हैं। यीशु ने संसार के लिए दुःख उठाया (2:24)। इसमें कुछ तो बात है कि उसके अनुयायियों को उसके दुःखों में सहभागी होना है ताकि लोग विश्वास करने लगें।

पतरस के बारे में एक काल्पनिक कथा

एक मसीही, जिसने एक स्वप्न देखा, के बारे में एक कहानी है। उसने स्वप्न में देखा कि एक स्वर्गदूत उसको स्वर्ग की सैर करा रहा है। जब वह स्वर्ग के दृश्य को देखते हुए और परमेश्वर की स्तुति करते हुए स्वर्ग में भ्रमण कर रहा था तो उसने कुछ लोगों को अपने दाहिने ओर एकत्रित देखा। उसने अपने स्वर्गदूत मार्गदर्शक से पूछा, "ये लोग कौन हैं और जिसके चारों ओर वे एकत्रित हैं वह कौन है?" स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "जिस व्यक्ति को तुम बातें करते हुए देख रहे हो वह प्रेरित पौलुस है। वह परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह जो यीशु मसीह के द्वारा प्रकट हुआ, का वर्णन कर रहा है।" इस व्यक्ति ने सोचा, "यह भीड़ मेरे लिए अधिक पढ़ी लिखी और धर्मी जान पड़ती है। मैं उसमें शामिल नहीं हो सकता हूँ।"

वे थोड़ा और आगे बढ़े और उसने अपने बाएं ओर एक और भीड़ को एक शिक्षक के चारों ओर जमा हुए देखा। उसने अपने मार्गदर्शक से फिर पूछा, "ये कौन हैं?" स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, "जो व्यक्ति बोल रहा है वह प्रेरित यूहन्ना है। वह उस रात्रि को स्मरण कर रहा है जब वह प्रभु की छाती की ओर झुक कर बैठा था। वह इस भीड़ को परमेश्वर का प्रेम जो उसके हरेक लोगों के लिए है बता रहा है।" वह व्यक्ति आगे बढ़ा। ये लोग धर्मी और अच्छे हैं। उसको लगा कि वह उनके समान नहीं है।

जैसे ही वे आगे बढ़े उसने एक ओर लोगों का तीसरी भीड़ देखी। उसने वही प्रश्न दोहराया, "ये लोग कौन हैं?" मार्गदर्शक ने उत्तर दिया, "यह प्रेरित पतरस है। वह इन लोगों को उस रात्रि के बारे में बता रहा है जब उसने मसीह का तिरस्कार किया था।" इस व्यक्ति ने सोचा, "ऐसा लगता है कि मुझे यहाँ ठहर जाना चाहिए। जो पतरस कह रहा है उससे मैं अपने आपको संबंधित कर सकता हूँ।" यह कहानी काल्पनिक है परंतु इसमें मसीहियों के विश्वास के लिए और संदेह

और उत्साह के लिए और प्रेरित पतरस की कमजोरियों का विवरण प्रस्तुत करने के द्वारा कुछ आकर्षण अवश्य है।

समाप्ति नोट्स

[1]पतरस की अन्य व्याख्याओं के बीच फ्रैंक एल. क्रास, *1 पीटरः ए पास्कल लिटरजी* (लंदनः ए. आर. मॉब्रे एण्ड कम्पनी लिमिटेड, 1954) थी। उनके सीमित अनुयायी थे। [2]जॉन एच. इलियट, "द रिहाबिलिटेशन आफ एन एग्जेजेटिकल स्टेप-चाइल्ड: 1 पीटर इन रीसेंट रिसर्च," *जॉर्नल आफ बिब्लिकल लिटेरेचर* 95 (जून 1976): 243-54. 1976 के बाद इस पत्री पर कई उच्चकोटी टीकाओं का प्रकाशन हुआ है। [3]आरम्भिक कलीसिया की गवाही के लिए, देखें जे. रैमसे माइकल्स, *1 पीटर*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यूम 49 (वाको, टेक्सासः वर्ड बुक्स, 1988), xxxii. [4]यह प्रमाण कि पतरस की मृत्यु रोम में हुई, बहुत ठोस है। रोम के क्लेमेंट ने सुझाव दिया कि पतरस की मृत्यु शहर में हुई (*1 क्लेमेंट* 5.4)। इग्नेशियस ने भी इसी ओर संकेत दिया (इग्नेशियस *रोमियों* 4.2)। यूसिबियुस ने रोम के गयुस और कुरिंथ के डाइओनिसियस की बातों को भी कुछ इसी अंदाज में लिया (यूसिबियुस *एक्कलेसियास्टिकल हिस्ट्री* 2.25)। [5]वेन ए. ग्रूडेम के अनुसार सीलास इस पत्री को लेकर गया था न कि लिपिक जिसने इसे लिखा। (वेन ए. ग्रूडेम, *द फर्स्ट इपिस्टल आफ पीटरः एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमेंट्री*, टिंडेल न्यू टेस्टामेंट कमेंट्रीज, वोल्यूम 17 [ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1988], 23-24; देखें ई. रैंडोल्फ रिचार्ड्स, "सिलवानस वाज नॉट पीटर्स सेक्रेट्रीः थियोलॉजिकल बाइस इन इंटरप्रेटिंग डिया\सिलूआनूव ... ऐग्रेया इन 1 पतरस 5:12," *जॉर्नल आफ दि इवांजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाईटी* 43 [सेप्टेम्बर 2000]: 417-32.) एडवार्ड गॉर्डन सेलवीन के अनुसार सीलास ही वह लिपिक था जिसने इस पत्री को लिखा। पहला पतरस का यूनानी भाषा यह सुझाव देता है कि प्रेरित का संबंध सीलास या किसी अन्य से था। यह नहीं हो सकता है कि गलील के मछुए को इतना समय या संसाधन प्राप्त हुआ हो जिसके कारण उसने 1 पतरस जैसी भाषा पर पारंगत हासिल किया हो। (एडवार्ड गॉर्डन सेलवीन, *द फर्स्ट इपिस्टल फ़ोस सेंट पीटरः द ग्रीक टेक्स्ट, विद इंट्रोडक्शन, नोट्स, एण्ड ऐसेज*, थॉर्नएप्पल कमेंट्रीज, द्वितीय संस्करण [लंदनः मैक्मिलन एण्ड कम्पनी, 1947; पुनः मुद्रित ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः बेकर बुक हाऊस, 1981], 11-16.) [6]यह बड़ा रोचक है कि आलोचक 2 पतरस 1:16-18 की पतरस के रूपांतरण का उल्लेख को इस बात का प्रमाण मानते हैं कि पतरस इस पत्री का लेखक नहीं हो सकता है। उनका तर्क होता है कि प्रेरित बनावटी रूप से इस प्रकार की घटना को सुसमाचार से लेकर इस पत्री में नहीं जोड़ सकते हैं। आलोचक दोनों विवादों को एक साथ नहीं ले सकते। [7]क्योंकि ऐसा जान पड़ता है कि पौलुस ने प्रेरितों के काम की पुस्तक से पहले अपनी पत्रियाँ लिखीं तो इस दृष्टिकोण से नए नियम में प्रेरितों के काम की पुस्तक में पतरस के बारे में अंतिम उल्लेख पाया जाता है। फिर भी, प्रेरितों के काम की पुस्तक की कहानी के संदर्भ में जब पौलुस ने पतरस का उल्लेख अपनी पत्रियों में किया तो प्रेरितों 15 की परिस्थिति इस कहानी के बाद की जान पड़ती है। [8]स्ट्राबो *जियोग्राफी* 16.1.5. [9]जकर्याह 5:5-11 में, "दुष्टता" को एपा में रखा गया है और दो पंख वाली स्त्रियाँ उसे "शिनार देश" में ले जा रही हैं। शिनार देश, जो कि बेबीलोन है, सब प्रकार की दुष्टता का देश है जिससे इस्राएल को पवित्र किया गया है। [10]सी. एफ. डी. मूल, "द नेचर एण्ड परपज आफ 1 पीटर," *न्यू टेस्टामेंट स्टडीज* 3 (नवंबर 1956): 10.

[11]उदाहरण के लिए देखें, जे. डब्ल्यु. सी. वार्ड, *द जेनेरल एपिस्टल आफ सेंट पीटर एण्ड सेंट ज्यूड* (लंदनः मेथुएन & कम्पनी लिमिटेड, 1934), 13.